



30 Jul 1980

11:05 PM

Ghaziabad

Model: Baby-Horoscope

Order No: 120924601

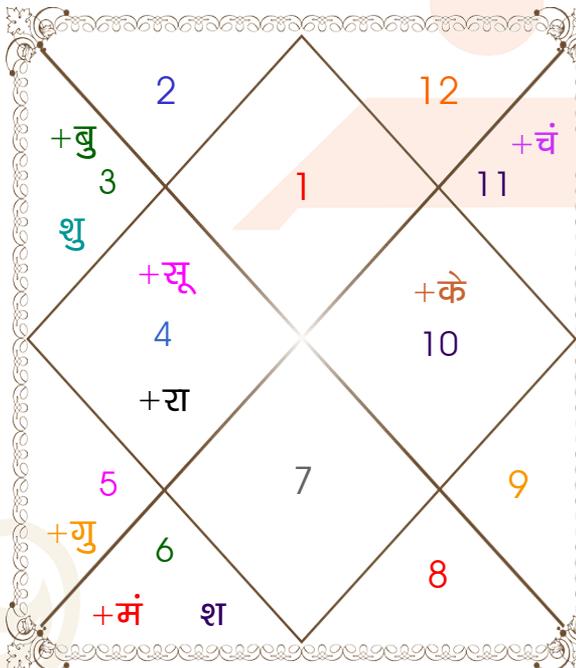
तिथि 30/07/1980 समय 23:05:00 वार बुधवार स्थान Ghaziabad चित्रपक्षीय अयनांश : 23:34:59
अक्षांश 28:40:00 उत्तर रेखांश 77:26:00 पूर्व मध्य रेखांश 82:30:00 पूर्व स्थानिक संस्कार -00:20:16 घंटे

पंचांग	अवकहड़ा चक्र
साम्पातिक काल : 19:18:46 घं	गण _____: मनुष्य
वेलान्तर _____: 00:06:23 घं	योनि _____: सिंह
सूर्योदय _____: 05:40:29 घं	नाडी _____: आद्य
सूर्यास्त _____: 19:12:24 घं	वर्ण _____: शूद्र
चैत्रादि संवत _____: 2037	वश्य _____: मानव
शक संवत _____: 1902	वर्ग _____: मेष
मास _____: श्रावण	रैजा _____: अन्त्य
पक्ष _____: कृष्ण	हंसक _____: वायु
तिथि _____: 4	जन्म नामाक्षर _____: सो-सोमनाथ
नक्षत्र _____: पू०भाद्रपद	पाया(रा.-न.) _____: स्वर्ण-लौह
योग _____: अतिगण्ड	होरा _____: गुरु
करण _____: बव	चौघड़िया _____: अमृत

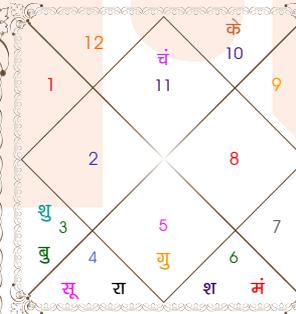
विंशोत्तरी	योगिनी
गुरु 11वर्ष 8मा 28दि बुध	भामरी 2वर्ष 11मा 7दि उल्का
29/04/2011	07/07/2024
29/04/2028	08/07/2030
बुध 25/09/2013	उल्का 07/07/2025
केतु 22/09/2014	सिद्धा 07/09/2026
शुक्र 23/07/2017	संकटा 07/01/2028
सूर्य 30/05/2018	मंगला 07/03/2028
चन्द्र 29/10/2019	पिंगला 07/07/2028
मंगल 25/10/2020	धान्या 06/01/2029
राहु 15/05/2023	भामरी 06/09/2029
गुरु 19/08/2025	भद्रिका 08/07/2030
शनि 29/04/2028	

ग्रह	व अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न		03:56:49	मेष	अश्विनी	2	केतु	चंद्र	---	0:00			
सूर्य		14:05:40	कर्क	पुष्य	4	शनि	राहु	मित्र राशि	1.38	पुत्र	पितृ	सम्पत
चंद्र		23:32:43	कुंभ	पू०भाद्रपद	2	गुरु	शनि	सम राशि	1.21	अमात्य	मातृ	जन्म
मंगल		17:58:44	कन्या	हस्त	3	चंद्र	बुध	शत्रु राशि	1.22	भातृ	भातृ	वध
बुध		24:48:38	मिथु	पुनर्वसु	2	गुरु	बुध	स्वराशि	1.11	आत्मा	ज्ञाति	जन्म
गुरु		17:48:00	सिंह	पू०फाल्गुनी	2	शुक्र	मंगल	मित्र राशि	1.40	मातृ	धन	प्रत्यारि
शुक्र		01:26:53	मिथु	मृगशिरा	3	मंगल	बुध	मित्र राशि	1.33	ज्ञाति	कलत्र	मित्र
शनि		00:20:39	कन्या	उ०फाल्गुनी	2	सूर्य	राहु	मित्र राशि	1.34	कलत्र	आयु	साधक
राहु		26:37:18	कर्क	आश्लेषा	3	बुध	गुरु	शत्रु राशि	---		ज्ञान	विपत
केतु		26:37:18	मक	धनिष्ठा	1	मंगल	गुरु	शत्रु राशि	---		मोक्ष	मित्र

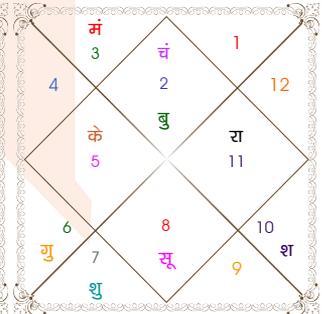
लग्न-चलित



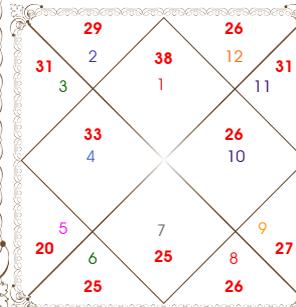
चन्द्र कुंडली



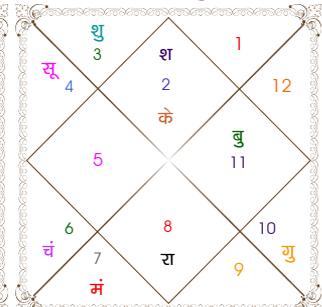
नवमांश कुंडली



सर्वाष्टकवर्ग



दशमांश कुंडली



नक्षत्रफल

आपका जन्म पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के द्वितीय चरण में हुआ है। अतः आपकी जन्मराशि कुम्भ तथा राशिस्वामी शनि होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ग मेष, गण मनुष्य, नाड़ी आद्य, योनि सिंह तथा वर्ण शूद्र होगा। नक्षत्र के द्वितीय चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "सो" अक्षर से होगा यथा- सोहन लाल, शोभासिंह आदि।

आप इन्द्रियों को पूर्ण रूप से अपने वश में रखेंगे तथा संयमी पुरुष की तरह जीवन व्यतीत करेंगे। आप नाना प्रकार की कलाओं तथा कार्यों में निपुण रहेंगे। अतः समाज में आपका पूर्ण मान सम्मान रहेगा। आपके शत्रु आपसे सदैव भयभीत एवं पराजित रहेंगे एवं इनको नष्ट करने में आप हमेशा सफल रहेंगे। आप तीव्र बुद्धि के स्वामी होंगे तथा अपने अधिकांश कार्यों को अपनी ही बुद्धि से सम्पन्न तथा सफल बनाने में सफल रहेंगे। इससे आपको आत्म संतुष्टि रहेगी एवं जीवन प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा।

**जितेन्द्रियः सर्वकलासु दक्षो जितारिपक्षः खलु यस्य नित्यम्।
भवेन्मनीषा सुतरामपूर्वा पूर्वादिका भाद्रपदा प्रसूतौ।।
जातकाभरणम्**

अर्थात् पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र में उत्पन्न जातक जितेन्द्रिय, समस्त कलाओं में निपुण, शत्रुपक्ष को जीतने वाला तथा बुद्धिमान होता है।

आप जीवन में कभी कभी हृदय से अत्यन्त ही दुःख की अनुभूति भी करेंगे। स्त्री के आप हमेशा पूर्ण रूप से वश में रहेंगे तथा उसी के कथनानुसार या निर्देशानुसार अपने समस्त सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करेंगे इनमें स्वतंत्र निर्णय लेने में आप प्रायः असमर्थता का अहसास करेंगे। धनैश्वर्य से आप हमेशा सुशोभित रहेंगे एवं जीवन काल में सुखपूर्वक उसका उपभोग करेंगे लेकिन आप कंजूसी प्रवृत्ति से भी युक्त रहेंगे अतः इससे अन्य लोग आपसे अप्रसन्न रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप एक चतुर तथा विद्वान पुरुष भी रहेंगे।

**भाद्रपदासूद्विग्नः स्त्रीजितधनी पटुरदाता च।।
बृहज्जातकम्**

अर्थात् पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र में उत्पन्न मनुष्य हृदय से दुःखी, स्त्री के वश में रहने वाला, धनवान चतुर पीड़ित तथा कृपण स्वभाव का होता है।

आपकी वाणी अत्यन्त ही ओजस्वी तथा साहसिक होगी जिससे अन्य लोग आपसे अत्यन्त ही प्रभावित रहेंगे तथा आपको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। लेकिन आप प्रवृत्ति से डरपोक भी रहेंगे तथा समय कमय पर इससे व्याकुलता की भी अनुभूति करेंगे। परन्तु अन्य सामाजिक जनों से आपके परस्पर संबंध अत्यन्त ही स्नेहशील एवं मधुर होंगे।

पूर्वप्रोष्ठपदि प्रगल्भवचनो धूर्तोभयार्तो मृदुः।।

जातक परिजातः

अर्थात् पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में पैदा होने वाला पुरुष साहस एवं ओजस्वी वाणी बोलने वाला, धूर्त, भय से व्याकुलता प्राप्त करने वाला तथा मृदुस्वभाव का होता है।

भाषण देने की कला में आप दक्ष रहेंगे एवं अपने ओजस्वी भाषण से सभी लोगों को प्रभावित तथा आकर्षित करने में सफल रहेंगे। जीवन में आवश्यक सुखसंसाधनों का आपके पास अभाव नहीं रहेगा। आप सपरिवार सर्वत्र मान सम्मान एवं आदर प्राप्त करेंगे। परन्तु आपको नींद अधिक मात्रा में आएगी तथा इससे आपमें आलस्य की वृद्धि होगी अतः कभी कभी आप कुछ भी कार्य को करने के योग्य नहीं रहते न ही प्रायः कोई कार्य करेंगे। इससे आपको अनावश्यक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा।

वक्ता सुखीप्रजायुक्तो बहुनिद्रोनिरर्थकः।

पूर्वाभाद्रपदायां च जातो भवति मानवः।।

मानसागरी

अर्थात् पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र में उत्पन्न जातक श्रेष्ठ वक्ता, सुखी, सम्मान वाला, अधिक नींद वाला तथा स्वयं किसी कार्य के योग्य नहीं होता है।

आप स्वर्ण पाद में उत्पन्न हुए हैं। यद्यपि स्वर्ण पाद में उत्पन्न होने के कारण जातक को कई प्रकार से दुःख एवं कष्ट प्राप्त होते हैं। इस से उसका शारीरिक स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता तथा प्रायः धनाभाव से भी दुःखी रहता है। साथ ही जीवन में सुख संसाधनों से भी हीन रहता है तथा सांसारिक कार्यों में अल्प मात्रा में सफलता प्राप्त होती है जिससे मन में तनाव आदि विद्यमान रहता है। इसके अतिरिक्त जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उसे अत्यधिक परिश्रम के द्वारा अल्प सफलता अर्जित होती है। चूंकि आपका चन्द्रमा जन्म कुण्डली में शुभ राशि में स्थित है। अतः आपके लिए यह स्वर्ण पाद अधिकांश शुभ फल ही प्रदान करेगा। अतः आप जीवन में समस्त सुख संसाधनों वैभव ऐश्वर्य एवं धनादि से सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में पर्याप्त मात्रा में धनार्जन करके समाज में एक धनाढ्य पुरुष के रूप में प्रख्यात रहेंगे। समाज में आप एक सम्माननीय व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपका हार्दिक सम्मान करेंगे। साथ ही वाहनादि सुखों से भी आप युक्त रहेंगे एवं जीवन में प्रसन्नतापूर्वक इसका उपभोग करेंगे। आप सद्गुणों से सर्वथा सम्पन्न रहेंगे। आपकी पत्नी भी सुन्दर सुशील एवं गुणवान होगी तथा आपके सेवकगण भी ईमानदार रहेंगे। साथ ही आप के लाभ मार्ग भी हमेशा प्रशस्त रहेंगे। आप दीर्घायु होंगे एवं शारीरिक कान्ति भी दर्शनीय रहेंगी। इसके अतिरिक्त पुत्रादि का भी आप पूर्ण रूप से सुख प्राप्त करेंगे।

कुम्भ राशि में उत्पन्न होने के कारण आपकी नाक उंची होगी तथा मुख एवं मस्तक विस्तृत रहेगा। साथ ही हाथ, पैर एवं कटिभाग में स्थूलता का प्रभाव रहेगा। आपके शरीर में रुक्षता का भाव भी रहेगा। लेकिन कृत्रिम उपायों से यह दूर हो जाएगी एवं आपके सौन्दर्य पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा। आप विद्रोही स्वभाव के रहेंगे तथा जीवन में यदा कदा इस

भाव का आप प्रदर्शन करते रहेंगे। साथ ही क्रोधाधिक्य भी आप में रहेगा। धर्म के प्रति भी आपकी निष्ठा नहीं रहेगी। साथ ही आलस्य से भी युक्त रहेंगे। इसके अतिरिक्त शिल्प या चित्रकारी में आपकी विशेष रुचि रहेगी तथा इस क्षेत्र में आप को सफलता एवं ख्याति प्राप्त हो सकेगी। साथ ही कभी कभी आप मानसिक रूप से दुःखानुभूति करेंगे।

**उद्धोणो रुक्षदेहः पृथुकरचरणो मद्यपान प्रसक्तः ।
सद्द्वेष्यो धर्महीनः परसुतजनकः स्थूलमूर्धाकुनेत्रः ॥
शाद्यालस्याभिभूतो विपुलमुखकटिः शिल्पविद्या समेते ।
दुःशीलो दुःखतप्तो घटभमुपगते रात्रिनाथे दरिद्रः ॥**
सारावली

आप विविध शास्त्रों का अपनी बुद्धि तथा परिश्रम से विस्तृत ज्ञान प्राप्त करेंगे तथा समाज में एक विद्वान के रूप में आदरणीय तथा ख्याति प्राप्त होंगे। साथ ही नाना प्रकार के कार्यों को करने में भी आप प्रवीण रहेंगे। आप शान्त प्रवृत्ति के व्यक्ति होंगे तथा उग्र एवं हिंसक भावों का आप में अभाव रहेगा। साथ ही शत्रुपक्ष पर विजय प्राप्त करने तथा उनको भयभीत करने में भी आप सफल रहेंगे।

**अलसता सहितोनयसुतप्रियः कुशलताकलितोळति विचक्षणः ।
कलशगामिनि शीतकरे नरः प्रशमितः शमितोरुरिपुव्रजः ॥**
जातकाभरणम्

आप कठोर कार्यों को करने में भी रुचिशील रहेंगे या इनको अपना सहयोग प्रदान करेंगे। यात्रा करने तथा भ्रमण करने में आपकी विशेष रुचि रहेगी तथा इन पर आप अपना अधिकांश समय व्यतीत करेंगे। दूसरे के धन के प्रति आपके हृदय में लालच का भाव रहेगा तथा इसे प्राप्त करने के लिए भी आप नित्य प्रयत्नशील रहेंगे। आपकी आर्थिक स्थिति में उतार चढ़ाव आते रहेंगे अतः इस विषमता से आप को कई बार कठिनाई का भी सामना करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त सुगन्धित द्रव्यों का अनुलेपन करने तथा पुष्पादि के प्रति भी आपकी आसक्ति रहेगी तथा इसका आप सामान्यतया प्रयोग करते रहेंगे।

**प्रच्छन्नपापो घटतुल्य देहो विघातदक्षोळध्वसहो डवित्तः ।
लुब्धः परार्थी क्षयवृद्धि युक्तो घटोद्भवः स्यात्प्रियगन्धपुष्पः ॥**
फलदीपिका

आप एक श्रेष्ठ विद्वान होंगे तथा समाज में आप आदर प्राप्त भी रहेंगे लेकिन अन्य गणमान्य विद्वानों को आप कभी भी यथोचित सम्मान तथा आदर प्रदान नहीं करेंगे। इससे सज्जन लोग आपसे प्रायः अप्रसन्न रहेंगे।

**कुम्भस्थे गतशीलवान बुधजनद्वेषी च विद्याधिको ।
जातक परिजातः**

आप जीवन से प्रत्येक क्षेत्र में सामान्यतया सफलता तथा विजय ही प्राप्त करेंगे

तथा आपका आचरण भी श्रेष्ठ रहेगा जो अन्य जनों के लिए प्रशंसनीय तथा अनुकरणनीय रहेगा। धन सम्पत्ति से आप प्रायः सुसम्पन्न ही रहेंगे लेकिन यदा कदा इसका आपको अभाव भी रहेगा। गुरुजनों तथा श्रेष्ठ लोगों के प्रति आपके मन में श्रद्धा तथा सेवा का भाव रहेगा तथा समय समय पर आप इनकी सेवा तथा सहायता करते रहेंगे एवं उनसे पूर्ण स्नेह प्राप्त करेंगे। आपका परिवार भी विशाल रहेगा एवं जाति तथा वर्ग के कल्याणकारी कार्यों को करने के लिए आप हमेशा तत्पर रहेंगे तथा यत्नपूर्वक उनको सफल बनाने में अपना प्रमुख योगदान प्रदान करेंगे इससे जाति तथा धर्म के मध्य आपके सम्मान में वृद्धि होगी एवं वे आपको अत्यन्त ही श्रेष्ठ एवं श्रद्धेय समझेंगे। इस प्रकार विभिन्न प्रकार के सद्गुणों से युक्त होकर तथा इनका अनुपालन करके आप जीवन में पूर्ण सुखानुभूति प्राप्त करेंगे।

**भुवनविजययुक्तः सुन्दरः सच्चरित्रः ।
स्थिरधन गुरुभक्तो मानिनी चित्तरक्तः ।।
बहुजनपरिवारो ज्ञातिवर्गेषु कर्ता ।
सकलगुणसमेतः कुम्भराशि र्मनुष्यः ।।
जातक दीपिका**

आपके गर्दन की लम्बाई सामान्य से अधिक रहेगी तथा शरीर की नसे भी शरीर से बाहर स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होंगी। महिला वर्ग से आपके संबंध मित्रतापूर्ण रहेंगे एवं उनसे आपको पूर्ण आदर एवं सम्मान भी प्राप्त होगा।

**करभगलः शिरालुः खरलोमशदीर्घतनुः ।
पृथुचरणोरुपृष्ठ जघनास्य कटिर्जरठः ।।
परवनितार्थ पापनिरतः क्षयवृद्धियुतः ।
प्रियकुसुमानुलेपन सुहृदघटजो ळध्वसहः ।।
वृहज्जातकम्**

आप स्वभाव से ही दानशीलता के भाव से भी युक्त रहेंगे एवं जीवन में यथाशक्ति इस प्रवृत्ति का अनुपालन करते रहेंगे। इससे आप समाज में सबकी प्रशंसा के पात्र रहेंगे। आप में कृपणता का भाव भी रहेगा एवं अन्य जनों से उपकृत होने पर आप उनका उपकार स्वीकार करेंगे तथा हृदय से आभार भी प्रकट करेंगे। जीवन में आपको विभिन्न प्रकार के वाहन साधनों की भी प्राप्ति होगी एवं सुखपूर्वक आप इनका उपभोग करते रहेंगे। आपकी आर्खें अत्यन्त ही सुन्दर होंगी तथा बुद्धि में भी सरलता का भाव रहेगा एवं अन्य जनों से धोखा या प्रपंच की प्रवृत्ति आपकी नहीं रहेगी इस प्रकार अपने स्नेह शील व्यवहार तथा सत्कार्यों से आप समाज में लोकप्रिय रहेंगे तथा सुखपूर्वक जीवन यापन करेंगे तथा स्वबाहु बल से धनार्जन करके सुखप्राप्त करेंगे।

**दातालसः कृतज्ञश्च गजवाजिधनैश्वरः ।
शुभदृष्टिः सदासौम्यो धनविद्याकृतोद्यमः ।।
पुण्याढ्यः स्नेहकीर्तिश्च धनभोगी स्वशक्तः ।
शालूरकुक्षिर्निर्भीतः कुम्भे जातो भवेन्नरः ।।**

मानसागरी

मनुष्य गण में जन्म होने के कारण आपकी प्रवृत्ति धार्मिक रहेगी तथा देवता एवं ब्राह्मणों के प्रति आपके मन में अनन्य श्रद्धा तथा सेवा का भाव रहेगा। आपका स्वभाव अभिमानी भी रहेगा अतः समय समय पर आप इसका प्रदर्शन भी करते रहेंगे। आपके मन में दया एवं करुणा की भावना सदैव विद्यमान रहेगी। आप एक बलशाली पुरुष होंगे तथा कई कार्यों एवं कलाओं के ज्ञाता होंगे। अतः समाज में आप एक आदरणीय एवं सम्मानीय समझे जायेंगे। विविध शास्त्रों का आपको अच्छा ज्ञान रहेगा। अतः एक विद्वान के रूप में भी आपकी प्रतिष्ठा रहेगी। इसके अतिरिक्त आप विभिन्न लोगों को सुख प्रदान करने की भी क्षमता रखेंगे।

समाज में आप हमेशा मान सम्मान से युक्त रहेंगे तथा सर्वप्रकार से धनैश्वर्य से सुसम्पन्न रहकर प्रसन्नता पूर्वक जीवन यापन करेंगे। आपकी आखें बड़ी बड़ी होंगी तथा निशाने बाजी की कला में निपुणता अर्जित करेंगे। इस क्षेत्र में आप सफलता तथा ख्याति भी प्राप्त कर सकते हैं। शरीर से आपका गौरवर्ण रहेगा तथा नगरवासी हमेशा आपके वश में रहेंगे अर्थात् नगर के आप एक प्रभावशाली गणमान्य व्यक्ति हो सकते हैं।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः ।

प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः ।।

जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

सिंह योनि में जन्म होने के कारण आपकी प्रवृत्ति धार्मिक रहेगी एवं धार्मिक वृत्तियों का आप यत्नपूर्वक पालन करते रहेंगे। आपकी रुचि भी अच्छे कार्यों को करने की ओर अधिक रहेगी तथा यत्नपूर्वक इसके लिए आजीवन आप तत्पर रहेंगे। इस प्रकार अपने इन सत्कार्यों से आप समाज में सम्मान आदर तथा ख्याति अर्जित करेंगे। इसके साथ विभिन्न प्रकार के सद्गुणों से भी आप सुशोभित रहेंगे एवं इसके अनुपालन के लिए सर्वदा उद्यत रहेंगे। इसके साथ ही कुल एवं परिवार की चहुमुखी उन्नति तथा समृद्धि करने के लिए आप अपना तन, मन, धन से सहयोग अर्पण करेंगे तथा इस कार्य में पूर्ण रूपेण सफल रहकर पारिवारिक जनों के प्रिय एवं सम्माननीय बनेंगे।

स्वधर्मं तु सदाचारसत्कियासद्गुणान्वितः ।

कुटुम्बस्य समुद्धर्ता सिंहयोनिभवो नरः ।।

मानसागरी

अर्थात् सिंहयोनि में उत्पन्न जातक अपने धर्म में सच्चा आचार-व्यवहार वाला, अच्छी किया एवं अच्छे गुणों से सम्पन्न और परिवार का उद्धार करता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति एकादश भाव में है। अतः माता के आप सदैव प्रिय रहेंगे एवं आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य तथा स्नेह का भाव विद्यमान रहेंगे। जीवन में आपकी उन्नति एवं समृद्धि के लिए सदैव आपको अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करती रहेंगी। साथ ही उन्हीं के सहयोग से आप अपने आय साधनों की वृद्धि करने में सफल हो सकेंगे। इस प्रकार जीवन के समस्त महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आपको माता का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। साथ ही मातृपक्ष से भी आपको नित्य धन लाभ होता रहेगा।

आपके मन में भी उनके प्रति हार्दिक श्रद्धा का भाव रहेगा तथा उनकी आज्ञा पालन करना एवं उनकी सेवा करना आप अपना प्रिय कर्तव्य समझेंगे। आपके परस्पर संबंध अत्यन्त ही स्नेहपूर्ण रहेंगे एवं उनमें मतभेदों का प्रायः अभाव ही रहेगा। इस प्रकार आप परस्पर एक दूसरे के लिए शुभ रहेंगे।

आपके जन्म काल में सूर्य चतुर्थ भाव में स्थित है। अतः पिता के आप प्रिय होंगे उनका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा युक्त रहेंगे एवं जीवन के समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपका यत्नपूर्वक सहयोग करते रहेंगे। पिता से आपको धन, वाहन तथा अन्य प्रकार से सम्पत्ति अर्जित करते रहेंगे। इसके साथ ही नौकरी तथा व्यापार में भी आप उनसे सहयोग प्राप्त करते रहेंगे तथा उन्हीं के सहयोग से उन्नति भी करेंगे।

आप के मन में उनके प्रति सम्मान एवं आदर का भाव विद्यमान रहेगा एवं उनकी आज्ञा पालन में भी रुचि रहेगी। आपके परस्पर मतभेदों के कारण संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा परन्तु वह क्षणिक रहेगा। इसके अतिरिक्त जीवन में आप हमेशा उनके सुख दुःख का भी ध्यान रखेंगे तथा अवसरानुकूल वांछित सहायता भी प्रदान करेंगे।

आपके जन्म समय में मंगल छठे भाव में है अतः भाईयों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर वे शारीरिक रूप से अस्वस्थ रहेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह एवं सम्मान का भाव रहेगा। जीवन में वे समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों तथा क्षेत्र में आपको अपना वांछित सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं अपनी ओर से आपको किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगे। साथ ही शत्रुवर्ग से भी वे आपकी नित्य रक्षा करने में तत्पर रहेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा एवं हमेशा उनको अपना सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपकी आपसी संबंध मधुर रहेंगे तथा यदा कदा सामान्य रूप से मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में क्षणिक तनाव की स्थिति रहेगी परन्तु कुछ समय के उपरान्त स्वतः ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप सुख दुःख में उनकी वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से भी सहयोग देंगे एवं यत्नपूर्वक उनकी भलाई करने में तत्पर रहेंगे।

आपके लिए चैत्र मास, तृतीया, अष्टमी तथा त्रयोदशी तिथियां, आर्द्रा नक्षत्र, गण्डयोग, वणिजकरण, गुरुवार, तृतीय प्रहर तथा धनु राशिस्थ चन्द्रमा सर्वदा अनिष्टकारी रहेंगे।

अतः आप 15 मार्च से 14 अप्रैल के मध्य 3,8,13 तिथियों, आर्द्रा नक्षत्र, गण्डयोग तथा वणिजकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, कयविकय आदि अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही गुरुवार, तृतीय प्रहर तथा धनु राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य के प्रति भी विशेष सावधान रहना चाहिए।

यदि आपके लिए समय प्रतिकूल चल रहा हो मानसिक चिन्ताएं, शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में व्यवधान या अन्य महत्वपूर्ण कार्यों में असफलता मिल रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट कुबेर की आराधना करनी चाहिए तथा नियमित रूप से शनिवार के उपवास रखने चाहिए। साथ ही सोना, नीलम, लोहा, तिल, तेल, कम्बल तथा चर्मपादुका आदि पदार्थों का किसी सुपात्र को दान देना चाहिए। इसके अतिरिक्त शनि के तांत्रिय मंत्र के कम से कम 19000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपकी चिन्ताएं दूर होंगी तथा स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं समस्त अशुभ प्रभाव समाप्त होकर शुभ फलों की वृद्धि होगी। साथ ही सर्वत्र लाभमार्ग भी प्रशस्त होंगे।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।

मंत्र- ॐ ऐं ह्रीं शीं शनैश्चराय नमः।